2023
संशोधित
संस्करण

द लेक्सिकन

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि

सिविल सेवा परीक्षा के सामान्य अध्ययन प्रश्न–पत्र IV के
पाठ्यक्रम व बदलती प्रवृत्ति के अनुरूप

टॉपर्स द्वारा पठित व अनुमोदित

इस पुस्तक से विगत वर्षों में 90 प्रतिशत से अधिक प्रश्न पूछे गए

यह पुस्तक नीतिशास्त्र एवं इससे संबंधित अवधारणाओं के सभी आयामों को समाहित करने वाला एक उत्कृष्ट संग्रह है। इसके अंतर्गत अवधारणाओं से संबंधित उदाहरणों तथा केस स्टडी को भी शामिल किया गया है। पुस्तक यूपीएससी तथा उन सभी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम के अनुरूप है, जिनमें नीतिशास्त्र एक प्रमुख विषय है।

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण

द लेक्सिकन

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि

❑ केस स्टडी ❑ अवधारणा ❑ सिद्धांत ❑ मुद्दे ❑ शब्दावली

संघ एवं राज्य सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन पेपर-IV के संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

☑ **टॉपर्स द्वारा पठित व अनुमोदित**

☑ **90 प्रतिशत से अधिक प्रश्नों के उत्तर समाहित**

संपादकः एन. एन. ओझा
(सिविल सेवा परीक्षाओं के मार्गदर्शन में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव)
लेखन एवं प्रस्तुतिः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

संपादक संवाद

द लेक्सिकन 'नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि' का यह **अद्यतन संशोधित संस्करण** 2023 सामान्य अध्ययन पेपर-IV के पाठ्यक्रम के अनुरूप तथा वर्तमान में प्रश्नों के बदलते स्वरूप को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। यह पुस्तक संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं के लिए उपयोगी है।

सिविल सेवा परीक्षा में विगत वर्षों के प्रश्नों की प्रकृति निरंतर बदल रही है। पहले संघ लोक सेवा आयोग द्वारा शब्दावली आधारित, परिभाषाओं और अवधारणाओं की सैद्धांतिक समझ से संबंधित प्रश्न पूछे जाते थे, परंतु वर्तमान में समाज की बदलती प्रकृति, व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन के साथ-साथ पेशेवर व व्यवसायिक जीवन में भी नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि की प्रासंगिकता पर अधिक ध्यान केंद्रित कर प्रश्न पूछे जा रहे हैं।

नैतिकता की प्रकृति में बदलाव को ध्यान में रखते हुए, इस पुस्तक को मानव जीवन में नैतिकता की भूमिका, **पेशेवरों व व्यवासयिकों के सामाजिक उत्तरदायित्व,** लाभार्थियों को मदद करने वाली ई-शासन पहल आदि के अनुरूप संशोधित किया गया है।

वर्तमान में पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रकृति में, समाज के कमजोर वर्गों पर नीतियों, पहलों और राजनीतिक निर्णयों से संबंधित नैतिकता आधारित दृष्टिकोण का प्रभाव देखा जा रहा है।

इसे ध्यान में रखते हुए, मानवीय मूल्यों और मानवीय क्रियाओं में **नैतिकता के पहलुओं का समावेशन** किया गया है।

इस संस्करण में **कार्यनिर्वाह-क्षमता, बुद्धिमत्ता, सहानुभूति और संवेदना** जैसे मूल्यों को शमिल किया गया है, जो सिविल सेवकों की दक्षता में सुधार के लिए आवश्यक है।

सिविल सेवकों के मूलभूत मूल्यों पर आधारित प्रश्न पहले भी पूछे जाते रहे हैं, परंतु सिविल सेवकों को जन-केंद्रित 'कर्मयोगियों' में बदलने के उद्देश्य से कार्यनिर्वाह-क्षमता, बुद्धिमत्ता, सहानुभूति और संवेदना जैसे मूल्यों को अधिक महत्व दिया गया है।

इस संशोधित संस्करण में प्रशासन में सुधार और इसे अधिक समावेशी, पारदर्शी, जवाबदेही के साथ-साथ नागरिक-केंद्रित बनाने के लिए दूसरे प्रशासनिक सुधार आयोग (एआरसी) द्वारा की गई सिफारिशों को शामिल किया गया है। साथ ही, सूचना के लोकतंत्रीकरण, बजट में पारदर्शिता आदि जैसी अवधारणाओं को भी शामिल किया गया है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक आपके लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। पुस्तक में सुधार और संशोधन के संबंध में आप अपना सुझाव books@chronicleindia.in पर भेज सकते हैं।

- एन.एन. ओझा (संपादक)

पाठ्यक्रम

सामान्य अध्ययन-IV : नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

इस प्रश्न-पत्र में ऐसे प्रश्न शामिल होंगे जो सार्वजनिक जीवन में उम्मीदवारों की सत्यनिष्ठा, ईमानदारी से संबंधित विषयों के प्रति उनकी अभिवृत्ति तथा उनके दृष्टिकोण तथा समाज से आचार-व्यवहार में विभिन्न मुद्दों तथा सामने आने वाली समस्याओं के समाधान को लेकर उनकी मनोवृत्ति का परीक्षण करेंगे। इन आयामों का निर्धारण करने के लिए प्रश्न-पत्रों में किसी मामले के अध्ययन (केस स्टडी) का माध्यम भी चुना जा सकता है। मुख्य रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों को कवर किया जाएगा:

- नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध: मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व, इसके निर्धारक और परिणाम; नीतिशास्त्र के आयाम; निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र; मानवीय मूल्य-महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा; मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका।
- अभिवृत्ति: सारांश (कंटेन्ट), संरचना, वृत्ति: विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध; नैतिक और राजनीतिक अभिरुचि; सामाजिक प्रभाव और धारणा।
- सिविल सेवा के लिए अभिरुचि तथा बुनियादी मूल्य, सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर-तरफदारी, निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव, कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति, सहिष्णुता तथा संवेदना।
- भावनात्मक समझ: अवधारणाएं तथा प्रशासन और शासन व्यवस्था में उनके उपयोग और प्रयोग।
- भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान।
- लोक प्रशासन में लोक/सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्र: स्थिति तथा समस्याएं; सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएं तथा दुविधाएं; नैतिक मार्गदर्शन के स्त्रोतों के रूप में विधि, नियम, विनियमन तथा अंतरात्मा; शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण; अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तथा निधि व्यवस्था (फंडिंग) में नैतिक मुद्दे; कार्पोरेट शासन व्यवस्था।
- शासन व्यवस्था में ईमानदारी: लोक सेवा की अवधारणा; शासन व्यवस्था और ईमानदारी का दार्शनिक आधार, सरकार में सूचना का आदान-प्रदान और पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, नीतिपरक आचार संहिता, आचरण संहिता, नागरिक घोषणा पत्र, कार्य संस्कृति, सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता, लोक निधि का उपयोग, भष्टाचार की चुनौतियां।
- उपर्युक्त विषयों पर मामला संबंधी अध्ययन (केस स्टडी)।

अनुक्रमणिका

1. लेक्सिकन ऑफ केस स्टडी 01–32

- केस स्टडी क्या है?
- केस स्टडी के प्रकार
- केस स्टडी पर संक्षिप्त विवरण
- केस स्टडी को हल करने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण
- केस स्टडी में शामिल हितधारक
- केस स्टडी की व्याख्या
- विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न (संक्षिप्त विवरण)

2. नीतिशास्त्र और मानवीय सह–संबंध 33–100

- मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व, इसके निर्धारक एवं परिणाम
- नीतिशास्त्र के आयाम
- मानवीय मूल्य–महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा
- निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र
- मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका
- परिवार व मूल्य विकास

3. अभिवृत्ति 101–146

- अभिवृत्ति सारांश, विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध
- अभिवृत्ति में परिवर्तन
- वास्तविक बनाम अभिव्यक्त अभिवृत्ति
- नैतिक और राजनीतिक अभिवृत्ति
- राजनीतिक अभिवृत्ति
- सामाजिक प्रभाव और धारणा
- प्रत्यायन या धारणा
- लोक एवं प्रशासनिक अभिवृत्ति तथा भारत में अभिशासन

4. सिविल सेवा अभिरुचि और बुनियादी मूल्य 147–176

- सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर-तरफदारी
- भारत में सिविल सेवा मूल्य
- अभिरुचि
- सत्यनिष्ठा
- बुद्धिमता
- कार्यनिर्वाह-क्षमता
- निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव
- कमजोर वर्गों के प्रति समानुभूति, सहिष्णुता तथा संवेदना

5. भावनात्मक समझ 177–208

- भावनात्मक समझ
- भावनात्मक गुणक: संवेगात्मक बुद्धि की मात्रा का प्रारूप
- भावनात्मक समझ और कार्य अभिवृत्ति (मनोवृत्ति)
- भावनात्मक बुद्धि व समझ रखने वाले प्रशासक के गुण
- नेतृत्वकर्ता में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की समझ
- व्यक्तिगत नैतिक नीति

6. भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान 209–256

- दर्शन
- आधुनिक नैतिक दर्शन
- मानकीय नीतिशास्त्र के सिद्धांत
- भ्रष्टाचार और नीतिशास्त्रीय सिद्धांत
- नीतिशास्त्र के अन्य प्रमुख सिद्धांत
- भारतीय दर्शन में नीतिशास्त्र
- धर्म और नीतिशास्त्र
- प्रमुख धर्म एवं नीतिशास्त्र
- गांधीवादी नीतिशास्त्र
- स्वार्थमूलक नैतिकता
- कानून, नियम और नीतिशास्त्र
- अस्तित्ववादी नैतिकता-जीन पॉल सार्त्र
- दंड और इसका नैतिक औचित्य
- वैश्विक न्याय

7. लोक प्रशासन में लोक/सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्र 257–310

- स्थिति तथा समस्याएं
- नैतिक सक्षमता
- सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएं तथा दुविधाएं
- दुविधा
- नेतृत्व
- नैतिक मार्गदर्शक के स्रोतों के रूप में विधि, नियम, विनियमन तथा अंतरात्मा
- शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण

8. अंतरराष्ट्रीय संबंध और नैतिकता 311–334

- अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता
- व्यापक राष्ट्रीय शक्ति
- सामाजिक पूंजी और अंतरराष्ट्रीय संबंध
- अंतरराष्ट्रीय मामलों के अंतर्गत नैतिक मुद्दे
- अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप
- युद्ध की नैतिकता के विरुद्ध तर्क

9. शासन व्यवस्था में ईमानदारी 335–416

- लोक सेवा की अवधारणा
- सिविल सेवा
- शासन व्यवस्था और ईमानदारी का दार्शनिक आधार
- सरकार में सूचना का आदान-प्रदान, सूचना का अधिकार और पारदर्शिता
- नीतिपरक आचार संहिता, आचरण संहिता
- आचरण संहिता
- नागरिक घोषणा पत्र
- कार्य संस्कृति
- नागरिकों को सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता
- सार्वजनिक निधि का उपयोग
- भ्रष्टाचार की चुनौतियां
- सत्यनिष्ठा समझौता
- नागरिक समाज
- ई-शासन

10. प्रशासन में हितों का संघर्ष/टकराव 417–442

- सरकार में हितों का टकराव
- प्रशासन में संघर्ष
- सेवा की भावना
- अतिव्यापी/परस्पर व्याप्त और अन्तरनुभागीय जिम्मेदारियों में हितों का संघर्ष/टकराव

11. व्यावसायिक नीतिशास्त्र 443–464

- व्यावसायिक शासन
- व्यवसायों के लिए नैतिक दुविधाएं
- व्यावसायिक नीतिशास्त्र
- अभियांत्रिकी नीतिशास्त्र

12. उद्धरण और कथन 465–478

- भारतीय
- पश्चिमी
- वैश्विक
- मूल्यों पर कथन
- नैतिकता पर कथन
- शक्ति पर दार्शनिक विचार
- भ्रष्टाचार पर कथन
- उद्धरण और लोकोक्तियां

13. नैतिक मुद्दे 479–540

- समाज और सामाजिक मुद्दे
- अंतरात्मा का संकट
- कमजोर और वंचित वर्ग
- स्वास्थ्य और स्वास्थ्य संबंधी नैतिकता
- चिकित्सा उद्योग के नीतिगत मुद्दे
- शिक्षा और नैतिक मुद्दे
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी
- डिजिटलीकरण तथा संस्कृति
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संबंधित नैतिक मुद्दे
- डेटा गोपनीयता और संरक्षण
- भारतीय पत्रकारिता और भारतीय मीडिया
- मानवीय मूल्यों के साथ नवाचार
- लोक प्रशासन और शासन
- शरणार्थी संकट
- कॉर्पोरेट शासन से संबंधित नैतिक मुद्दे
- पर्यावरण
- अर्थव्यवस्था
- अंतरराष्ट्रीय नैतिकता
- आपदा-प्रबंधन नीतिशास्त्र

14. नीतिशास्त्र संबंधित शब्दावली 541–560

1

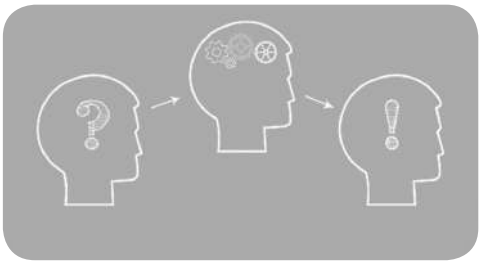

लेक्सिकन ऑफ केस स्टडी

आज सिविल सेवा राजनीतिक हस्तक्षेप, कमजोर आधार तथा उचित कार्य वातावरण के अभाव के रूप में कई चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसे में सैद्धान्तिक अध्ययन की अपनी सीमाएं स्पष्ट हो जाती हैं। अत: संघ लोक सेवा आयोग द्वारा यह निर्णय लिया गया कि बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में सिविल सेवा परीक्षा में उन पद्धतियों को शामिल किया जाए, जो अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो तथा जिनसे नौकरशाही का ऐसा वर्ग तैयार हो, जो केवल किताबी ज्ञान में महारत न रखता हो, अर्थात् नौकरशाही से रोज वास्ता पड़ने वाले विषयों का भी व्यावहारिक ज्ञान हो। यह पुस्तक भी सिविल सेवा परीक्षा में आए बदलाव को ध्यान में रखकर तैयार की गई है, जिनमें कई ऐसे 'Terms' हैं, जिन्हें समझने में पाठकों को कठिनाई हो सकती है। केस स्टडी मॉडल एक ऐसा माध्यम है, जिसके सहारे उन 'Terms' को सरलीकृत किया जा सकता है, ताकि उन्हें प्रासंगिक संदर्भ से जोड़कर बृहद परिप्रेक्ष्य में समझा जा सके।

नीचे दिए गये अनुभाग में हमने उद्देश्यपूर्ण तरीके से यह प्रस्तुत किया है कि केस स्टडी के प्रश्नों को कैसे हल किया जाता है। केस स्टडी, किसी मामले के बेहतर प्रबंधन से संबंधित शिक्षाशास्त्र कहा जाता है। इसके अलावा कुछ लेख भी दिए गये हैं, जो केस स्टडी के प्रश्नों को सही समझ विकसित करने एवं बेतरीन तरीकों से सुलझाने में मदद करेंगे।

केस स्टडी क्या है?

एक केस स्टडी कोई गतिविधि, घटना या समस्या है, जिसमें वास्तविक या काल्पनिक स्थितियां शामिल होती हैं और इसमें वे जटिलताएं भी सम्मिलित होती हैं जिनका व्यक्ति कार्यस्थल पर सामना करता है। केस स्टडी का विषय, वास्तविक जीवन की जटिलताएं और किसी व्यक्ति या अधिकारी के निर्णय पर इनका प्रभाव होता है। केस स्टडी का विश्लेषण करने के लिए आपको अपने ज्ञान और सोच कौशलों को वास्तविक जीवन की स्थितियों पर लागू करने की आवश्यकता होती है। केस स्टडी विश्लेषण से सीखने के लिए आप 'विश्लेषण, ज्ञान और तर्क को लागू करेंगे और निष्कर्ष निकालेंगे।' (कार्डोस और स्मिथ 1979)

कार्डोस और स्मिथ के अनुसार एक अच्छी केस स्टडी में निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं:

- इसे वास्तविक जीवन से लिया जाता है (सच्ची पहचान को छिपाया जा सकता है)।
- इसमें कई भाग होते हैं और प्रत्येक भाग आमतौर पर समस्या और चर्चा के बिन्दुओं पर समाप्त होता है। केस में स्थिति (situation) की कोई स्पष्ट निर्दिष्ट सीमा नहीं हो सकती है।
- इसमें पाठक के लिए समस्याओं और मुद्दों के समाधान हेतु पर्याप्त सूचना होती है।
- यह पाठक के विश्वासयोग्य होती है (केस में समायोजन (Setting), व्यक्तित्व, घटनाओं का क्रम, समस्याएं और संघर्ष शामिल होते हैं)

संक्षेप में, एक केस स्टडी आपको निष्क्रिय रहने के स्थान पर भाग लेने का मौका देती है। किसी मामले पर परीक्षार्थियों के दृष्टिकोण को बेहतर तरीके से जानने का एक साधन उपलब्ध करता है। इसके माध्यम से परीक्षक प्रश्नोत्तर शैली की परीक्षा से परे उम्मीदवार के भीतर क्षमता की मौजूदगी या गैरमौजूदगी की संभावना का परीक्षण कर सकता है।

केस स्टडी के प्रकार

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम का सामान्य अध्ययन पेपर-4 की विषय वास्तु नीतिशास्त्र (एथिक्स) है। पेपर 4 का एक सेक्शन केस स्टडी से सम्बंधित होता है, जहां से 100 से अधिक अंको के प्रश्न पूछे जाते हैं। केस स्टडी उम्मीदवारों के लिए प्रमुख स्कोरिंग क्षेत्रों में से एक है और इसलिए केस स्टडी की समझ तैयारी का बहुत महत्वपूर्ण पहलू है। केस स्टडी के मामलों को हल करने के लिए उम्मीदवार का दृष्टिकोण काफी महत्वपूर्ण होता है। यूपीएससी द्वारा पूछे गए केस स्टडी पर प्रश्न इस मामले में अलग हैं कि, वे उन विशेषताओं की जांच करते हैं, जो एक सिविल सेवक से अपेक्षित हैं।

केस स्टडीज के प्रासंगिक विश्लेषणों से हम देख सकते हैं कि वे मूल रूप से वास्तविक या काल्पनिक स्थितियां हैं जहां व्यक्ति के समक्ष नैतिक समस्याएं या नैतिक दुविधाएं उपस्थित होती हैं। कुछ मामलों में नैतिक दुविधाओं की कई परतें हो सकती हैं। जहाँ कोई अधिकारी कई स्तरों पर अपने ऊपर के अधिकारियों या अधीनस्थों के संपर्क में रहता है वहां दुविधाओं के भी कई स्तर हो सकते हैं। ऐसी दुविधाएं मजबूत नैतिक मानकों के साथ ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए बहुआयामी बौद्धिकता की मांग करती हैं। इसके अलावा नीतिशास्त्र के कुछ केस निश्चित लक्ष्यों और उद्देश्यों पर आधारित होते हैं। इन केसों को मानक नैतिक अभ्यास (standard ethical practices) द्वारा हल किया जाता है।

अलग-अलग केसों को हल करने के लिए अलग-अलग रणनीतियों की आवश्यकता होती है। इसलिए किस प्रकार का केस दिया गया है और नैतिक दुविधाओं को सुलझाने के लिए किस प्रकार का दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए, यह जानने के लिए सबसे पहले केस स्टडी के प्रकार और उससे जुड़ी दुविधा की पहचान आवश्यक है।

2

नीतिशास्त्र और मानवीय सह-संबंध

नीतिशास्त्र सिद्धांतों का एक समूह है जो हमारे निर्णयों को प्रभावित करता है और हमारे जीवन की दिशा और लक्ष्य निर्धारित करता है। एक समाज के अपने नैतिक मानदंडों कमानवीय कार्यों में नीतिशास्त्र की अवधारणा और सिद्धांत, निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र का मानक सेट अपने लोगों के व्यवहार, निर्णयों और कार्यों के लिये एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।

'मानव क्रिया' नैतिकता का प्रारंभिक बिंदु है। किसी व्यक्ति के किसी भी कार्य की नैतिकता या अनैतिकता का निर्धारण करने में सबसे पहले विचार करने वाले बिंदुओं में से एक यह है कि यह एक सचेत मानवीय कार्य होना चाहिये, इससे पहले कि इसमें कोई नैतिक गुण हो।

प्रत्येक मानव कार्य एक ठोस क्रम में विशेष परिस्थितियों में किया जाता है। इसलिये परिस्थितियां किसी कार्रवाई की नैतिकता को प्रभावित कर सकती हैं और नैतिक गुणवत्ता में कुछ जोड़ सकती हैं। मानव क्रिया की परिस्थितियों में ऐसी चीजें शामिल होती हैं जैसे किसी विशेष समय पर, किसी विशेष स्थान पर, किसी विशेष एजेंट द्वारा, विशेष तरीके से किया जाने वाला कार्य।

वस्तुतः नीतिशास्त्र मानक नियमों एवं आदर्शों द्वारा मानवीय आचरण तथा व्यवहार का नियमन, मार्गदर्शन तथा मूल्यांकन करने वाली एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसका लक्ष्य व्यक्ति और समाज का अधिकतम कल्याण है।

मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व, इसके निर्धारक एवं परिणाम

अवधारणा

Ethics अंग्रेजी का शब्द है, जिसकी उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'Ethica' से हुई है। 'Ethica' का अर्थ है- रीति, प्रचलन या आदत। नीतिशास्त्र रीति, प्रचलन या आदत का व्यवस्थित अध्ययन है।

प्रचलन, रीति या आदत मनुष्य के वे कर्म है, जिनका उसे अभ्यास हो जाता है। दूसरे शब्दों में, ये मनुष्य के अभ्यासजन्य आचरण है। मनुष्य की ऐच्छिक क्रियाएं आचरण कहलाती है; अर्थात् आचरण वे कर्म है, जिन्हें किसी उद्देश्य या इच्छा से किया जाता है। नीतिशास्त्र इन्हीं ऐच्छिक क्रियाओं या आचरण का समग्र अध्ययन है। इसकी विषयवस्तु आचरण है। अत: इसे आचारशास्त्र भी कहा जाता है।

आचरण का अध्ययन दो तरीके से किया जा सकता है-प्रथम, मनुष्य का आचरण कैसा होता है; द्वितीय, मनुष्य का आचरण कैसा होना चाहिए?

मनुष्य का आचरण कैसा होना चाहिए, इसके अध्ययन के लिए हमें एक शास्त्र की आवश्यकता होती है। वे कर्म, जिन्हें हम अच्छा या बुरा मानते आए हैं, वास्तव में उसकी कसौटी क्या है और वे कहां तक ठीक हैं? वह शास्त्र जिनमें इन पर विचार किया जाता है, नीतिशास्त्र कहलाता है। दूसरे शब्दों में, नीतिशास्त्र का प्रमुख कार्य है, मनुष्य के ऐच्छिक कार्यों की परीक्षा करके उन्हें नैतिक-अनैतिक या उचित-अनुचित की संज्ञा देना।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अत: यह अनिवार्य है कि उसके चरित्र एवं संकल्प नैतिक मानदंडों के अनुकूल हों, ताकि उसे जीवन के परम लक्ष्य-सत् तथा शुभ की प्राप्ति हो सके। नीतिशास्त्र इसी परम लक्ष्य अर्थात् सर्वोच्च आदर्श का अध्ययन करता है।

वस्तुत: नीतिशास्त्र मानक नियमों एवं आदर्शों द्वारा मानवीय आचरण तथा व्यवहार का नियमन, मार्गदर्शन तथा मूल्यांकन करने वाली एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसका लक्ष्य व्यक्ति और समाज का अधिकतम कल्याण है। व्यक्ति का आचरण उसके चरित्र पर निर्भर करता है। चरित्र के अनुकूल ही व्यक्ति का आचरण होता है। चरित्र मनुष्य के संकल्प करने का अभ्यास है। चूंकि नीतिशास्त्र शुभ आचरण का अध्ययन करता है, अत: इसे चरित्र विज्ञान की भी संज्ञा दी जाती है।

नीतिशास्त्र की परिभाषा

यह मानवीय प्रयासों में सही और गलत का अध्ययन करता है। अधिक सैद्धांतिक स्तर पर देखें तो यह वह पद्धति है, जिसके द्वारा हम अपने मूल्यों को वर्गीकृत करते हैं और उसका अनुपालन करते हैं। निस्संदेह यह एक तथ्य है कि मनुष्य में सही व गलत व्यवहार में फर्क करने की एक त्वरित जागरूकता होती है।

नैतिक दर्शनशास्त्र केवल उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारण नहीं करता, बल्कि यह उन तथ्यों की तात्पर्यता प्रदर्शित करने का प्रयास करता है, उसे बौद्धिक स्तर पर स्वीकार या खारिज करता है, उसके प्रभावों को समझता है, उसके व्यावहारिक परिणामों को देखता है और सबसे प्रमुख यह कि वह उसके अंतिम उद्देश्यों तक पहुंचता है। इस प्रकार नीतिशास्त्र को इस रूप में परिभाषित किया जा सकता है कि चरम प्रसन्नता प्राप्ति के साधन के रूप में औचित्य या अनौचित्य के दृष्टिकोण से मानवीय क्रियाकलापों का अध्ययन ही, नीतिशास्त्र है (The systematic study of human actions from the point of view of their rightfulness or wrongness as means for the attainment of the Ultimate happiness)। इस प्रकार नीतिशास्त्र मानवीय व्यवहार के उस भाग की अच्छाई या बुराई का चिंतनशील अध्ययन है, जिसकी कुछ व्यक्तिगत जवाबदेही है।

3

अभिवृत्ति (ATTITUDE)

सामाजिक प्रभाव के कारण लोग व्यक्ति के बारे में तथा जीवन से जुड़े विभिन्न विषयों के बारे में एक दृष्टिकोण या अभिवृत्ति विकसित करते हैं, जो उनके अंदर एक व्यवहारात्मक प्रवृत्ति के रूप में विद्यमान रहती है। जब हम लोगों से मिलते हैं, तब हम उनके व्यक्तिगत गुणों या विशेषताओं के बारे में अनुमान लगाते हैं। अभिवृत्ति का सामान्य अर्थ किसी मनोवैज्ञानिक विषय (अर्थात व्यक्ति, समूह, विचार, वस्तु, स्थिति या कुछ और जिसके बारे में भाव आ सके) के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक भाव की उपस्थिति है।

अभिवृत्ति की सभी परिभाषाएं इस बिंदु पर एकमत हैं कि अभिवृत्ति मन की एक अवस्था है। यह किसी विषय (जिसे अभिवृत्ति-विषय कहा जाता है) के संबंध में विचारों का एक पुंज है, जिसमें एक मूल्यांकनपरक विशेषता (सकारात्मक, नकारात्मक अथवा तटस्था का गुण) पाई जाती है। इससे संबद्ध एक सांवेगिक घटक होता है तथा अभिवृत्ति-विषय के प्रति एक विशेष प्रकार से क्रिया करने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है।

अभिवृत्ति सारांश, विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध

अवधारणा

फिशबीन एवं अजेन के मुताबिक ''अभिवृत्ति किसी दी हुई वस्तु के संदर्भ में निरंतर अनुकूल या प्रतिकूल भाव से प्रत्युत्तर की विज्ञ-पूर्ववृत्ति है'' (A learned predisposition to respond in a consistently favourable or unfavourable manner with respect to a given object.)। कुछ ऐसी ही परिभाषा **इगली और चायकेन** (1993) ने भी प्रस्तुत की। उनके मुताबिक ''अभिवृत्ति एक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है, जो किसी इकाई विशेष की कुछ हद तक पक्ष या विपक्ष से मूल्यांकन द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।'' (Attitude is a psychological tendency that is expressed by evaluating a particular entity with some degree of favour or disfavor)। इस परिभाषा के हिसाब से अभिवृत्ति सभी वस्तुओं अथवा परिस्थितियों के बजाय इकाई अथवा वस्तु विशेष पर केंद्रित है।

हिंदी में अभिवृत्ति की जगह 'मनोवृत्ति' एक प्रचलित शब्द है, जिसका व्यवहार प्रायः हम अपने दैनिक जीवन में दिन-प्रतिदिन करते हैं। वस्तुतः मनोवृत्ति किसी व्यक्ति की मानसिक तस्वीर या प्रतिच्छाया है; जिसके आधार पर वह व्यक्ति, समूह, वस्तु, परिस्थिति या फिर किसी घटना के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल दृष्टिकोण अथवा विचार को प्रकट करता है। मनोवृत्ति का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार पर दिशासूचक रूप से पड़ता है। मनोवृत्ति व्यक्ति की शक्ति को एक खास दिशा में लगा देती है, जिसके कारण वह अन्य दिशाओं को छोड़कर एक निश्चित दिशा में व्यवहार करने लगता है।

जैसा कि इसकी परिभाषा से स्पष्ट है- मनोवृत्ति सकारात्मक भी हो सकती है और नकारात्मक भी। अगर व्यक्ति की मनोवृत्ति सकारात्मक है तो उसकी प्रतिक्रिया भी अनुकूल होगी, परन्तु अगर मनोवृत्ति नकारात्मक है तो प्रतिक्रिया अनुकूल नहीं, बल्कि प्रतिकूल होगी; अर्थात् व्यक्ति की मनोवृत्ति तथा उसके व्यवहार के बीच सदा सम्बद्धता होती है।

अभिवृत्ति एवं अन्य धारणाएं

अभिवृत्ति को दो अन्य घनिष्ठ रूप से संबंधित संप्रत्ययों, विश्वास (beliefs) एवं मूल्य (values) से विभेदित किया जाना चाहिए। विश्वास, अभिवृत्ति के संज्ञानात्मक (Cognitive) घटक को इंगित करते हैं तथा एक ऐसे आधार का निर्माण करते हैं, जिन पर अभिवृत्ति टिकी है; जैसे ईश्वर में विश्वास या राजनीतिक विचारधारा के रूप में प्रजातंत्र में विश्वास।

मूल्य, ऐसी अभिवृत्ति या विश्वास है, जिसमें 'चाहिए' का पक्ष निहित रहता है; जैसे आचारपरक या नैतिक मूल्य। एक व्यक्ति को मेहनत करनी चाहिए, या एक व्यक्ति को हमेशा ईमानदार रहना चाहिए, क्योंकि ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है, ऐसे विचार मूल्य के उदाहरण हैं।

मूल्य का निर्माण तब होता है, जब कोई विशिष्ट विश्वास या अभिवृत्ति व्यक्ति के जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण का एक अभिन्न अंग बन जाती है। इसके परिणामस्वरूप मूल्य में परिवर्तन करना कठिन है। अभिवृत्ति के द्वारा किन उद्देश्यों की पूर्ति होती है? यह देखा जाता है कि अभिवृत्ति वह पृष्ठभूमि प्रदान करती है, जो एक व्यक्ति को यह निर्णय करने में सुविधा प्रदान करती है कि नई परिस्थिति में किस प्रकार से कार्य करना है। उदाहरणस्वरूप, विदेशियों के प्रति हमारी अभिवृत्ति। उनसे मिलने पर हमें उनके प्रति किस प्रकार से व्यवहार करना चाहिए, इसके लिए यह अप्रत्यक्ष रूप से एक मानसिक 'रूपरेखा' प्रदान करती है।

4

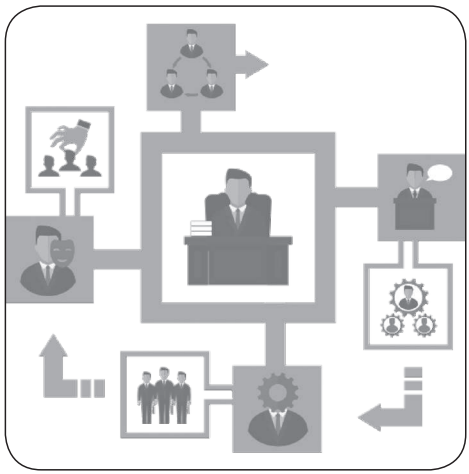

सिविल सेवा अभिरुचि और बुनियादी मूल्य

सिविल सेवा के लिए अभिरुचि तथा बुनियादी मूल्य, सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर-तरफदारी, निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव तथा कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति, सहिष्णुता व संवेदना को संदर्भित करता है।

लोक सेवकों के लिए नैतिक मूल्यों एवं मानकों का निर्धारण एक कठिन कार्य है। इस प्रक्रिया की अपनी कुछ सीमाएं हैं और यह स्पष्ट है कि विश्व के प्रत्येक क्षेत्र या फिर राष्ट्र का विकास एक समान नहीं हुआ है। इनके सामाजिक, सांस्कृतिक प्रतिमान एवं ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न रही है।

इन जटिल परिस्थितियों में लोक सेवकों को अपना काम करना पड़ता है। इन दुविधाजनक क्षणों में मूल्य व मानक ही वे सूत्र हैं, जो उनके व्यवहार को सही दिशा देते हैं, उनका मार्गदर्शन करते हैं तथा परिस्थितिजन्य आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करने में अथवा निर्णय लेने में मदद करते हैं।

सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर-तरफदारी

सिविल सेवकों के विशेष दायित्व होते हैं, क्योंकि वे समुदाय द्वारा सौंपे गए संसाधनों के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार होते हैं। वे समुदाय को सेवाएं उपलब्ध कराते हैं और महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं, जो समुदाय के जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करते हैं। समुदाय को यह उम्मीद करने का अधिकार है कि सिविल सेवक निष्पक्ष रूप से उचित और कुशलतापूर्वक कार्य करें। यह जरूरी है कि समुदाय सिविल सेवक निर्णय-निर्माण प्रक्रिया की निष्ठा में भरोसा और विश्वास करें।

सिविल सेवा के अन्दर यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उनके निर्णय और कार्य तत्कालीन सरकार की नीतियों और उन मानकों को परिलक्षित करें, जिसकी समुदाय सरकारी सेवकों के रूप में उनसे उम्मीद करता है। यह उम्मीद कि सिविल सेवा उत्तरोत्तर सरकारों की सेवा करने में एकसमान पेशेवरशीलता, प्रतिक्रियाशीलता और निष्पक्षता के मानक बनाए रखेंगे। लोकतंत्र में एक कुशल सिविल सेवकों में मूल्यों का एक समूह होना चाहिए, जो उसे अन्य व्यवसायों से अलग करें।

एकीकरण, सरकारी सेवा के प्रति समर्पण, निष्पक्षता, राजनीतिक तटस्थता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण, कमजोर वर्ग के लोगों के प्रति सहिष्णुता एवं सहानुभूति, एक कुशल सिविल सेवक की विशेषताएं समझी जाती हैं। कुछ देशों में इन विशेषताओं को कानूनों में समाहित किया गया है, उदाहरणार्थ ऑस्ट्रेलिया और कुछ अन्य देशों में उन्हें संबंधित संविधानों में शामिल किया गया है।

सिविल सेवा संहिता

सिविल सेवा संहिता में उल्लेखित मूल्यों का अर्थ-

- 'कर्त्तव्यनिष्ठा' का अर्थ, सार्वजनिक सेवा के दायित्वों को अपने खुद के हितों से ऊपर रखना है।
- 'ईमानदारी' का अर्थ सच्चा और खुला होना है।
- 'उद्देश्यपरकता' का अर्थ अपनी सलाह और निर्णयों को साक्ष्य के कठोर विश्लेषण पर आधारित करना है।
- 'निष्पक्षता' का अर्थ निष्पक्ष रूप से मामले के गुणावगुणों के अनुसार कार्य करना तथा उतनी ही अच्छी तरह के भिन्न-भिन्न राजनीतिक सिद्धांतों वाली सरकार की सेवा करना है।

इन महत्वपूर्ण मूल्यों से सरकार को समर्थन प्राप्त होता है तथा सिविल सेवाओं द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों में उच्चतम संभव मानकों की उपलब्धि सुनिश्चित होती है। बदले में इससे सिविल सेवक को मंत्रियों, संसद, जनता और इसके ग्राहकों का सम्मान प्राप्त करने तथा उसे बनाए रखने में मदद मिलती है। सिविल सेवकों से अपेक्षित कर्त्तव्यनिष्ठा और वफादारी का उल्लेख करने के अलावा संहिता में संसद या जनता को धोखा देना, पदों का दुरुपयोग और गोपनीय सूचना का अनाधिकृत प्रकटन निषिद्ध है। संहिता में उपयुक्तता और आत्मज्ञान के मामलों के संबंध में स्वतंत्र सिविल सेवा आयुक्त के समक्ष अपील करने की व्यवस्था है, यदि प्रश्नगत समस्या का समाधान विभाग के अन्दर न हो।

सार्वजनिक सेवा विधेयक 2007 के मसौदे में सार्वजनिक सेवा और सरकारी सेवक अपने कार्यों के निपटान में निम्नलिखित मूल्यों द्वारा मार्गदर्शित होने का उल्लेख करते हैं:

1. देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव को कायम रखना।
2. संविधान और राष्ट्र के कानून के प्रति निष्ठा।
3. उद्देश्यपरकता, निष्पक्षता, ईमानदारी, विवेक, विनम्रता और पारदर्शिता; तथा
4. पूर्ण सत्यनिष्ठा बनाए रखना।

सार्वजनिक सेवा मूल्यों की समीक्षा: केन्द्रीय प्राधिकरण, केन्द्रीय सरकार के अधीन संगठनों अथवा विभागों में सार्वजनिक सेवा मूल्यों को अपनाने, अनुपालन और कार्यान्वयन की समय-समय पर समीक्षा कर सकता है और केन्द्रीय सरकार को रिपोर्ट भेज सकता है।